पाँचवा – अध्याय

५. आलोच्य काल की कहानियों में नारी - चित्रण की विशेषताएँ...

सन्" १९८९ ई. की "सारिका" के अंक में नारी पर लिखी गयी कुलमिलाकर १ सत्रह कहानियाँ हैं। उनमें चित्रित हर कहानी का अनुशीलन तीसरे और चौथे अध्यायों में किया जा चुका है। किसी भी युग में नारी - चित्रण साहित्य का प्रमुख विषय रहा है। उसके रूपों में सामाजिक बदलाव के अनुसार लेखकों की दृष्टि में भी परिवर्तन आते रहे हैं। नारी समाज का एक अभिन्न अंग है। प्राचीन काल से उसके आजतक विभिन्न रूप सामने आये हैं। उन रूपों में आज बहुत भारी बदलाव आ गया है।

नारी की हर समस्या का चित्रण आज की कहानियों का प्रमुख विषय है। नारी की प्रमुख पुरानी समस्याओं को आज के कहानीकार नयी दृष्टि से चित्रित कर रहे हैं। सिर्फ समस्या का चित्रण ही नहीं बल्कि उस समस्या के मूल कारणों का भी परिक्षण किया जा रहा है। "सारिका" सन्" १९८९ ई. में. भी नारी की नई और पुरानी समस्याओं का चित्रण किया गया है। इस अंक की सत्रह कहानियों के कहानीकारों में से कुछ पुराने हैं तो कुछ नये। नये कहानीकारों ने नारी की आज की प्रमुख समस्या का चित्रण किया है। इसके साथ ही कुछ नये कहानीकारों ने नारी की पुरानी समस्या को नई दृष्टि से चित्रित किया है। इस अंक में कुछ कहानियों में नारी की एकही प्रकार की समस्या को लेकर एकाधिक कहानियाँ लिखी गयी हैं। किंतु एकही समस्या का चित्रण भिन्न - भिन्न ढंग से है, क्योंकि हर कहानीकार की उस समस्या की ओर देखने की दृष्टि अलग - अलग है। अतः हर कहानी में नारी - चित्रण की विशिष्ट विशेषताएँ दिखायी देती हैं। इसलिए इस अध्याय में हर कहानी की नवीनता और उसमें आपसी फर्क को परखने का प्रयास किया गया है। इसके साथ ही अलग - अलग प्रकार की नारी - समस्या को लेकर लिखी गयी कहानियों की विशेषताओं का भी अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

*परित्यक्ता नारी की कहानियाँ :-

"जुगनू" और "आइने की वापसी" नामक दो कहानियों में परित्यक्ता नारी का चित्रण किया गया है।

"जुगनू" कहानी में परित्यक्ता नारी की विवशता और भटकन को चित्रित किया गया है। प्रिया अपने एक पति के भूल के लिए हर पुरुष से बदला लेना चाहती है। इसलिए वह देवेन् से भी प्रतिशोध लेना चाहती है किंतु देवेन् के द्वारा कुछ कहने - समझाने के बाद प्रिया को अपनी गलती का एहसास हो जाता है। उसे अपनी व्यर्थ भटकन का परिचय हो जाता है।

"आइने की वापसी" में नासिरा शर्माजी ने भी परित्यक्ता नारी की समस्या को ही चित्रित किया है। नबीला को कमाल ने जिंदगी के आधे रास्ते में ही छोड़ दिया। किंतु नबीला अपने मकसद की ओर बिना हिचकिचाये आगे बढ़ती रही, और उसमें पूरी तरह कामयाब भी हो गयी। इस उसकी इसी निर्भिकता के कारण ही वह अंत में कमाल को अपनी जिंदगी में एक बार फिर आने को रोकती है। वह सोचती है जिस आदमी ने बिना सोचे समझे इतने वर्षों के संबंधों को झट से तोड़ दिया उसका वह फिर से स्वीकार कैसे करे ?

इसप्रकार उपर्युक्त दोनों कहानियों में परित्यक्ता नारी का ही चित्रण किया गया है। किंतु लेखक की अपनी अलग - अलग दृष्टि का परिचय होता है। "जुगनू" में प्रिया की भटकन अधूरे नारी - स्वातंत्र्य - भाव का परिणाम है। आधुनिक नारी - स्वतंत्रता की हवा से प्रभावित, अधकचरी विचारधारा में बहती नारी का यह चित्र है। प्रिया अपनी समस्या के मूल कारणों को समझ नहीं पाती। समस्या से बाहर आने के लिए वह अनेक बुरे मार्गों में फँसती जाती है। परित्यक्ता नारी के परित्याग का कारण उकसा अहं है। हमारे टूटते परिवारों के कारणों में से एक कारण यह भी है।अबतक परित्यक्ता नारी की पीड़ा के पीछे पुरुष - प्रधान समाज - व्यवस्था कारण बताई जाती रही, जबकि "जुगनू" में स्वतंत्र व्यक्तित्व - प्राप्त नारी के प्रतिशोध और समाज - व्यवस्था के परिवर्तन के अभाव में घुटन के चित्र हैं। इसके

साथ ही इस कहानी में नए रास्ते की खोज और अपनी भूल के बीच दम तोड़ती नारी का चित्रण किया गया है। बदलती और दबी समाज - व्यवस्था के संक्रमण कालीन स्वरूप को इसमें उजागर किया गया है। "आइने की वापसी" कहानी में नायिका शर्माजी ने भी परित्यक्ता नारी का ही चित्रण किया है॥ "जुगनू" कहानी की तरह उनकी इस कहानी की नायिका भटकती नहीं । कमाल उसका बचपन से साथी है॥ किंतु इतने वर्षों के संबंधों को वह एक मिनट में तोड़ देता है। नबीला उसके इस निर्णय से कुछ क्षण के लिए डगमगाती है किंतु दूसरे ही क्षण अपने आत्म - निर्णय के लिए आगे बढ़ना चाहती है। इस प्रकार नबीला का चित्रण स्वतंत्र - प्रज्ञ नारी के आत्मनिर्णय का सफल चित्र है। अगर इन दो कहानियों को तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो "जुगनू" की नायिका का रास्ता प्रतिशोध, भावुकता ढुलमुल भावना और भटकन का है तो "आइने की वापसी" की नायिका का रास्ता दृढ़ प्रतिज्ञा, आत्मनिर्णय, विचारशीलता और कृतिप्रवणता का है। "जुगनू" की नायिका प्रतिशोध और भावुकता के कारण ही भटकती है किंतु "आइने की वापसी" की नायिका अपने आप पर पूरा विश्वास करती है इसलिए अपनी मंजिल तक सफलतापूर्वक पहुँचती है।

* प्रेम की असफलता की कहानियाँ :-

"शिखर और शिखर", "आइने की वापसी", "प्रसंग" "उन्मुक्ति" इस चार कहानियों में प्रेम की असफलता का चित्रण किया गया है। एक ही समस्या के होते हुए भी इनके कारण अलग-अलग है। इसलिए प्रत्येक कहानी की अपनी - अपनी विशेषताएँ हैं । इन चार कहानियों में अगर तुलना की जाये तो निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आते हैं - "शिखर और शिखर" कहानी में प्रेम की असफलता का कारण सामाजिक अंध-रूढ़ियाँ भिन्न जाति और समाज से डटने की शक्ति की कमी है। इसीलिए प्रेमा और विमलदा अपने प्यार में असफल हो जाती हैं ॥ वे अपने प्यार को त्याग का नाम तो दे देते हैं किंतु वास्तविकता तो यह है कि वे समाज के सामने झुकते हैं । विमलदा पढ़े - लिखे होकर भी व्यवस्था के आगे हारते हैं। उनमें अपनी प्रेमिका को हमेशा के लिए अपनाने के लिए मनोबल नहीं।

और प्रेमा की भी यही स्थिति है परिणामत: वह अपने प्यार में असफल हो जाते हैं। "आइने की वापसी" कहानी में प्रेम की असफलता का कारण नायिका का अपने रास्ते से हटने से इन्कार ॥ यहाँ की असफलता स्वयं स्वीकृत है। अपने लक्ष्य के लिए उसने असफलता को खुद ओढ़ लिया है। इसमें किसीका दबाव नहीं। "प्रसंग" कहानी में प्रेम की असफलता का कारण नायिका की प्रेम में चुनाव की गलती है और उसे समाज - व्यवस्था के आगे मजबूर होकर झुकना पड़ता है परिणामत: अनमेल - विवाह का शिकार होना पड़ता है। इसप्रकार इस कहानी में प्रियंवदाजी ने अनमेल - विवाह की समस्या को अलग ढंग से चित्रित किया है। इस कहानी की नायिका शिक्षित है, डाक्टर है किंतु फिर भी भावना में बहकर एक विवाहित पुरुष के प्यार में फँसती है और बाद में एक बुढ़े के गले अपने को बँधाकर जीवन को, निराशमय, उदासीन बना देती है। "उन्मुक्ति" में प्रेम की असफलता का कारण पुरुष प्रधानता से उत्पन्न घुटन है॥ पुरुष का अहं ही नारी को अपने पीछे घसीटता है। इसमें ब्याह टूटा नहीं - बल्कि उससे प्राप्त घुटन है॥ इसमें भारतीय पुरुष प्रधान संस्कृति का चित्रण किया गया है॥ और उससे उत्पन्न नारी की दयनीयता, दुर्बलता, उसकी मजबूरी का चित्रण किया गया है। प्रेम - विवाह करके भी आज की नारी अपने वैवाहिक जीवन से संतुष्ट नहीं। वह कितनी भी पढ़ी - लिखी हो, आर्थिक दृष्टि से सबल हो किंतु उसे फिर भी पुरुष के पीछे ही चलना पड़ता है॥ नारी युगों से इस समस्या में पीसी है, पीस रही है और पीसती रहेगी। और इसीका चित्रण इस कहानी में मिलता है। नारी को इस समस्या से बाहर आनेका उचित रास्त ढूँढ़कर भी नहीं मिल रहा है॥ पति से अलग ए तो वह रह नहीं सकती इसीलिए इस कहानी में नायिका कहती है कि पति के साथ रहकर ही हमे अपनी समस्या से लड़ना चाहिए। उसके विचारों को बदल देना चाहिए। उससे अलग होकर तो नारी अपनी समस्या से बाहर नहीं आ सकती और उपर से अन्य अनेक जटिल समस्याओं में अटक जाती है। इसप्रकार इस कहानी में पूर्णिमा केडियाजी ने कुछ नये विचारों को, समस्या से बाहर आने के लिए नए रास्तों को चर्चित किया है यही इस कहानी की विशेषता है, नवीनता है।

इसप्रकार उपर्युक्त इन चार कहानियों में प्रेम की असफलता के कारण अलग-अलग हैं इसलिए हर कहानी की अपनी - अपनी विशेषताएँ हैं। इन चार कहानियों में नारी - मन की खीझ, अजनबीपन का बोध, अकेलपन की समस्या, टूटने की विवशता मन की छटपटाहट, प्रेम की निरर्थकता का ही चित्रण किया गया है। किंतु प्रत्येक कहानीकार ने भिन्न - भिन्न ढंग से और अत्यंत मार्मिकता से उसका चित्रण किया है॥ इसलिए प्रत्येक कहानी में तुलनात्मक दृष्टि से अंतर है, फर्क है।

* आर्थिक दुर्बलता के परिणामों की कहानियाँ :-

"ट्रेक्टर का पहाड़", "प्राचीन और तीन चेहरे", "अपने होने का एहसास" और "युक्ति" नामक चार कहानियों में नारी आर्थिक दुर्बलता और उससे प्राप्त दुष्परिणामों का चित्रण मिलता है॥

"ट्रेक्टर का पहाड़" कहानी का नायिका एक निर्जीव ट्रेक्टर के कारण अपने पिता से नहीं मिल सकती जो टी. बी. की बीमारी से मृत्यु की ओर बढ़ रहा है। ससुर ने दी हुयी ट्रेक्टर का कर्ज दामाद चुका नहीं पाता और बेटी का पीहर टूट जाता है॥ पति की नाकामी मायके का टूटना, पिता से न मिल पाना इन सब घटनाओं के पीछे आर्थिक दुर्बलता ही प्रमुख है। नायिका न तो शिक्षित है और नही आर्थिक दृष्टि से स्वस्था इसलिए अंततक उसे इस दर्द से छुटकारा नहीं।

"प्राचीन और तीन चेहरे" की नायिका दुल्लो अक्ल की तेज है, पढ़ने की उम्मीद है किंतु अत्याधिक गरीबी उसे आगे बढ़ने नहीं देती। वह अपनी जिंदगी अंततक लोगों के घर चौका - बर्तन करते ही बीतातती है।

"अपने होने का एहसास" कहानी की नायिका अनपढ़ और गरीब घर की है इसलिए विवाह के बाद वह पति के अमीर होने के बावजूद भी पति से शोषित होती रहती है॥ आगे - चलकर बेटा उसे उचित स्थान देता है॥

किंतु तबतक जिंदगी के अनमोल पंद्रह वर्ष वह पति के शोषण के भयंकर नरक में गुजार चुकी है।

"युक्ति" कहानी में आर्थिक दुर्बलता के कारण ही जया के चाचा-चाची जया का एक नौकरानी की तरह इस्तेमाल करते है। जया चाचा - - चाची के नकली प्यार को समझ नहीं पाती। और दिन - रात चाचा के घर में नौकरानी की तरह काम करती रहती है। जया के माँ - बाप भी पैसों के कारण ही अपनी संतान की परवरिश नहीं कर पाते। उनकी इस मजबूरी का कोई हल नहीं जिससे वे बाहर आ सके।

इसप्रकार यहाँ आर्थिक दुर्बलता के परिणामों की चार कहानियाँ चित्रित की गई हैं। एक ही समस्या के होते हुए भी हर कानी की घटना और इसके कारण अलग - अलग हैं। "ट्रेक्टर का पहाड़" में नायिका पति की नाकामी के कारण आर्थिक दृष्टि से दुर्बल है। "प्राचीन और तीन चेहरे" में पिता की गरीबी के कारण नायिका पढ़ नहीं सकती। -"अपने होने का एहसास" में पति के अमीर होने के बावजूद भी मायके की गरीबी उसका दुर्भाग्य है जिसके कारण पति के शोषण में वह दिन - रात पिसती है। और "युक्ति" में माँ - बाप की गरीबी से जया को चाचा - चाची के घर में नौकरानी के रूप में रहना पड़ता है। वास्तविकता तो यह है कि इन चार कहानियों में नारी की परंपरागत स्थिति का ही चित्रण किया गया है। भारतीय नारी की संयमशील वृत्ति का चित्रण उपर्युक्त चार कहानियों में मिलता है। एक भी कहानी में नारी का विद्रोही रूप दिखायी नहीं देता। अर्थात् उसका मूल कारण आर्थिक दुर्बलता है जो नारी की समस्त समस्याओं की मजूरी है। इस प्रकार तीन चार कहानियों की प्रमुख विशेषता यह है कि भारतीय परम्परा में बध्द नारी का चित्रण करना जो अलग - अलग घटनायें और कारणों के होते हुए भी एक ही उद्देश्य की ओर संकेत करती हैं।

***नौकरी समस्या :-**

"वह लड़की" कहानी में रमाकांतजी नौकरी पेशा नारी की समस्या को चित्रित करना चाहते हैं। इस कहानी की नायिका को एक ऑफिस का बॉस

नौकरी देने के लालच में अपने ऑफिस में बार - बार बुलाता है। वह नौकरी की बात को तो टालता है रहता है किंतु उसकी ओर वासना की दृष्टि से देखता है॥ किंतु नायिका ऐसी नौकरी हरगिज नहीं चाहती जिसमें उसका शोषण हो, इज्जत लूटी जाये। रमाकांतजी नौकरी की समस्या में नारी को एक विद्रोहिणी के रूप में चित्रित करना चाहते हैं॥ लेखक यह भी कहना चाहता है कि आधुनिक काल की नारी अपनी हर समस्या का निर्णय स्वयं कर रही है। आज की नारी पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। वह हर क्षेत्र में पुरुष से बराबरी करना चाहती है किंतु उस बराबरी में अगर पुरुष उसका व्यक्तिगत फायदा उठा रहा हो तो वह उस रास्ते को बिना हिचकिचाये ठुकराती है। यही इस कहानी की नवीनता है। और आज की नौकरीपेशा नारी की समस्या की ओर देखने की लेखक की नयी दृष्टि का परिचय भी मिलता है। नारी की दृष्टि में भी बदलाव का चित्रण इस कहानी में चित्रित है।

*** विवाह - समस्या :-**

"ताशमहल", "प्रसंग", "इस्तिंजा का ढेला", "तानसेन" नामक चार ही कहानियों में नारी - विवाह - समस्या को चित्रित किया गया है।

"प्रसंग" में अनमेल-विवाह का चित्रण है॥ "इस्तिंजा का ढेला" में शिक्षित नारी की विवाह समस्या को चित्रित किया गया है। "ताशमहल" में नारी के पुनर्विवाह की समस्या को चित्रित किया गया है। और - "तानसेन" में सौन्दर्य - हीन नारी की विवाह समस्या को चित्रित किया गया है।

"ताशमहल" में चित्रा मुदगलजी ने शोभना के माध्यम से पुनर्विवाह की समस्या को उठाया है। शोभना ने अपने पहले पति [दिवाकर] के बेटे बच्चू को लेकर दूसरा विवाह कर लिया है। दूसरे विवाह के बाद वह रोनू की माँ बन गयी। किंतु निशीथ बच्चू से घृणा करने लगा। वह माँ - बेटे के प्यार को जड़से तोड़ना चाहता है किंतु शोभना उसके इस - प्रस्ताव को ठुकराकर पति से ही हमेशा के लिए अलग हो जाती है।

चित्राजी की इस कहानी की यह विशेषता है कि उनकी इस कहानी की नारी पुरुष के परंपरागत अत्याचारों का सामना करना चाहती है। भारतीय नारी की तरह वह अपनी समस्या में पिसना नहीं चाहती। इसप्रकार चित्राजी नारी के पुनर्विवाह की समस्या को चित्रित करते हुए आज की नारी के मनोबल और सामर्थ्य को चित्रित करना चाहती हैं। उसकी शिक्षा और उससे प्राप्त आर्थिक स्वावलंबन उसके हर फैसले को उचित दिशा दे रहा है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्र - प्रज्ञ नारी के आत्म - निर्णय का यह सफल चित्र है। शोभना को यह मालूम है कि उसके इस फैसले से उसके जीवन में आगे चलकर अनेक कठिनाइयाँ हैं किंतु उन कठिनाइयों का सामना करने के लिए लिए भी वह तैयार है क्योंकि पत्नी से पहले वह एक माँ है। और माँ के सामर्थ्य का ही इस कहानी में दर्शन होता है। इसके साथ ही पुरुष के अत्याचारों, उसकी नारी की ओर देखने की हीन दृष्टि का भी परिचय होता है। पुरुष में स्थित अहं के कारण ही वह नारी के सामने झुकना नहीं चाहता। चाहे उससे पारिवारिक विघटन ही क्यों न हो। इसप्रकार पुरुष नारी को ही झुकाना चाहता है किंतु इस कहानी की नारी झुकना नहीं चाहती। वह भी अपने फैसले पर अटल है। यही इस कहानी की विशेषता है।

"प्रसंग" में उषा प्रियवंदाजी ने अनमेल - विवाह का चित्रण किया है। "प्रसंग" में प्रियवंदाजी ने अनमेल - विवाह की समस्या को अलग ढंग से चित्रित किया है। एक शिक्षित नारी, जो स्वंय डाक्टर है लेकिन भावना में अपने विवाहित पति से दूर नहीं हो पाती और उसकी मृत्यू पर सामाजिक बंधनों से बूढे से विवाह करने को मजबूर होती है। उसकी रोमांटिकता, व्यवस्था विरुध्द लड़ न सकने की दुर्बलता उसके जीवन को असफल बनानेवाले पहलू है। इसप्रकार चुनाव की गलती और समाज व्यवस्था के आगे झुकना उसकी मजबूरी बन गयी है। अत: उसके चित्रण में परंपरागत भारतीय नारी की घुटनशीलता, मन की खीझ, छटपटाहट, मानसिक अंतर्द्वंद्व दिखायी देता है।

"इस्तिंजा का ढेला" में डा. माजदा असदजी ने पढ़ी - लिखी नारी के विवाह की समस्या को चित्रित किया है॥ इस कहानी की नायिका विवाह के खातिर अनपढ़ रहना नहीं चाहती। वह ममड जैसे संकुचित वृत्ति के पुरुष से विवाह नहीं करना चाहती। इसप्रकार आज की नारी का शिक्षित होना भी बहुत बड़ा शाप बन गया है। किंतु आज की नारी इस शाप को वरदान बनाना चाहती है। वह शिक्षा से ही अपनी मंजील तक अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए पहुँच रही है। आज की नारी में जो नया बदलाव आ रहा है उसकी चित्रण करना इस कहानी का उद्देश्य है और यही इसकी विशेषता है॥

"तान्सेन" कहानी में चंपा लिमयेजी नेअनपढ़ और सौन्दर्यहीन नारी की विवाह - समस्या को चित्रित किया है। "तान्सेन" में लेखिका ने सौन्दर्य - हीन नारी की परंपरागत विवाह - समस्या को ही चित्रित किया है। किंतु एक दृष्टि से तान्से गरीब, अनपढ़ और सौन्दर्य - हीन होकरभी विद्रोहिणी रूप का ही परिचय देती है। वह समाज और घर से प्रतिशोध लेने के लिए जान और शील की बली चढ़ाती है। अत: इस कहानी में भारतीय नारी की सहनशीलता का तो परिचय मिलता ही है किंतु जब उस सहनशक्ति की अति हो जाती है तब वह चुप नहीं बैठ सकती॥ वह अपना विद्रोही रूप प्रकट करके ही स्वस्थ हो जाती है चाहे वह विद्रोह उचित हो या अनुचित। तान्से के माध्यम से लेखिका ने यही चित्रित किया है कि भारतीय नारी की सहनशक्ति और उसकी विद्रोहता उसे कहाँतक पहुँचा देती हैं।

उपर्युक्त इन चार कहानियों में नारी - विवाह - समस्या को ही चित्रित किया है। किंतु "ताजमहल" और "इस्तिंजा का ढेला"इन दो कहानियों में नारी अपनी विवाह - समस्या की सामना करती है॥ "ताजमहल" की नायिका" शोभना पुर्नविवाह करके भी पति से हमेशा के लिए अलग होने का फैसला करती है। तो "इस्तिंजा का ढेला" की नायिका विवाह के खातिर अनपढ़ रहना पसंद नहीं करती। "प्रसंग" और "तान्सेन" में नारीक की परंपरागत व्यथा को ही चित्रित किया है॥ "प्रसंग" की नायिका सुशिक्षित होकर भी अनमेल विवाह की शिकार है तो

"तान्सेन" में अनपढ़ और कुरूप नारी विवाह के खातिर अपनी जान और शील की बली चढ़ाती है। इसप्रकार "ताशमहल" और "इस्तिंजा का ढेला में नारी का विवाह के प्रति आधुनिक और विद्रोही रुख का परिचय मिलता है। तो "प्रसंग" और "तान्सेन" में परंपरांगत नारी पीड़ा का चित्रण हैं।

* दहेज - समस्या :-

"अब चिठ्ठी नहीं आयेगी" कहानी में करतार सिंह दुग्गलजी ने नारी की दहेज समस्या को चित्रित किया गया है। लेखक इस कहानी में दहेज - प्रथा के नए पहलू को दिखाना चाहते हैं। इस कहानी की नायिका अपने आपको माँ के घर जला लेती है। लेखक उसके इस नये कदम से यह संकेत देना चाहता है कि हर सास पहले माँ होती है, और पहले माँ को यह सबक सीखना होगा, तभी वह आदर्श सास बन सकती है और तमाम निष्पाप बहुओं की हत्यायें बच सकती है। इस प्रकार लेखक परंपरांगात स्थिति में बदलाव लाना चाहते है। एक नये प्रस्ताव से इस समस्या को मिटाने का प्रयास लेखक ने इस कहानी में किया है।

* नारी - स्वतंत्रता की समस्या :-

"आवागमन" कहानी में बलरामजी ने नारी - स्वतंत्रता की सीमाओं का चित्रण किया गया है। मंजरी का देहात में आगे बढ़ना उसके चाचा को ही बुरा लगता है परिणामत: मंजरी अपने मकसद को ही बीच में छोड़कर दिल्ली वापस आ जाती है। चाचा के राजनैतिक मकसद के सामने वह हार जाती है। इसप्रकार लेखक यह कहना चाहता है कि नारी - स्वतंत्रता की सामाजिक, राजनैतिक सीमायें उसके विकास में किसप्रकार रुकावट या बाधायें डालती हैं। उन बाधाओं से बाहर निकलना आज भी नारी के लिए असंभव है। आज भी नारी उन समस्याओं में घिरी है। मंजरी भी इसी समस्या में अटक जाती है। उस समस्या के बाहर आने के लिए उसे अपने मकसद को ही बीच में ही छोड़ना पड़ता हैं।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLH

* अकेलेपन की समस्या :-

"सुदंर पड़ोस" में प्रेम जनमे जयजी ने नारी के अकेलेपन की समस्या को चित्रित किया है। इस कहानी में इसका चित्रण मिलता है कि जब कभी कोई युवा लड़की किसी भी कारणवश अकेली रहने को विवश होती है तब समाज उसे किसप्रकार तंग कर देता है॥ इस कहानी में निहालिका के साथ भी यही होता है। आज भी पढ़ी - लिखी नारी नौकरी, व्यवसाय, पढ़ने के लिए या अन्य किसी भी कारण से अगर अकेली रहने को मजबूर हो जाय तो समाज उसकी मदद करने के बदले उकसाज जीना ही हराम कर देते है॥ वह लड़की कितनी भी सुशील और नेक हो किंतु उसका इस समस्या से छुटकारा नहीं । इस कहानी में लेखक ने इसी नारी - समस्या को छोटे - छोटे उदाहरण देकर अत्यंत सहजता से चित्रित किया है॥ कहानी छोटी किंतु अत्यंत मार्मिक है। कहानी में हास्य - शैली का प्रयोग किया गया है॥ हँसी - मजाक के योग से नारी की इस महत्वपूर्ण समस्या का चित्रण इस कहानी की विशेषता है॥

"चक्करघिन्नी" कहानी में मृदुला गर्गजी ने यह संकेत किया है कि नारी को समय के अनुसार बदलना आवश्यक है॥ इसलिए इस कहानी की नायिका विनीता भी नौकरी न करने की अपनी पूर्व-मनोवृत्ति को बदलकर बाद में पिता के ही अस्पताल में रिसेप्शनिस्ट की नौकरी करने के लिए राजी हो जाती है। लेखिका इस कहानी से यह कहना चाहती है कि आज की नारी को घर की चारदिवारी से बाहर आना आवश्यक बन पड़ा है क्योंकि आधुनिक युग की यह माँग है । नारी के घर से बाहर आने से ही उसके सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक विचारों में बदलाव आ सकता है। उसके व्यक्तिगत विकास की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण है। इस - प्रकार लेखिका इस कहानी से आज की नारी की जिम्मेदारियाँ उसके विकास की दिशायें स्पष्ट करना चाहती हैं।

* निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विस्तृत विवेचन के उपरान्त निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि आलोच्य काल की इन सत्रह कहानियों में कोई - न - कोई विशेषता दिखायी देती है। नारी की विविध रूपी समस्याओं को लेकर लिखी गयी ये कहानियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन सत्रह कहानियों में परित्यक्ता नारी की समस्या प्रेम की असफलता की कहानियाँ, आर्थिक दुर्बलता के परिणामों की कहानियाँ नारी की नौकरी समस्या, नारी - विवाह - समस्या, नारी की दहेज समस्या, नारी स्वतंत्रता की सीमाओं की समस्या, नारी के अकेलेपन की समस्या आदि का चित्रण किया गया है।

"जुगनू" कहानी में स्वतंत्र व्यक्तित्व प्राप्त नारी के प्रतिशोध और समाज व्यवस्था के परिवर्तन के अभाव में घुटन के चित्र हैं । नए रास्ते की खोज और अपनी भूल के बीच दम तोड़ती नारी का इस कहानी में चित्रण किया गया है। "आईने की वापसी" में स्वतंत्र क - प्रज्ञ नारी के आत्मनिर्णय का सफल चित्र प्रस्तुत है ।

"शिखर और शिखर" कहानी में प्रेम की असफलता का चित्रण किया गया है॥ समाजव्यवस्था, भिन्न जाती, समाज से डटने की शक्ति की कमी आदि प्रेम की असफलता के कारण बताये हैं ॥ "आइने की वापसी" में प्रेम की असफलता स्वयं स्वीकृत अपने लक्ष्य के लिए नायिका ने खुद ओढ़ ली है॥ "प्रसंग" में चुनाव की गलती और नारी का समाज व्यवस्था के आगे झुकना या मजबूरी का चित्रण किया गया है। "उन्मुक्ति" में पुरुष प्रधानता से उत्पन्न घुटन का चित्रण है।

"वह लड़की" कहानी में नारी की नौकरी की समस्या को चित्रित करते हुए नारी का विद्रोही रूप प्रस्तुत किया है।

"ताशमहल" में पुनर्विवाह की समस्या को चित्रित करते हुए आज की नारी इसका किसप्रकार सामना करती है इसका मार्मिक चित्रण किया गया है। "प्रसंग" में अनमेल-विवाह का चित्रण किया गया है॥ इस कहानी में नारी

का परंपरागत दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। "इस्तिंजा का ढ़ेला" में आधुनिक नारी - समस्या को चित्रित किया है॥ पढ़ी - लिखी नारी के विवाह की समस्या को चित्रित किया है। इसमें नारी की नयी और जटिल समस्या को अत्यंत प्रभावत्मकता से चित्रित किया है॥ "तानसेन" कहानी में सौन्दर्य हीन नारी की विवाह समस्या को चित्रित करते हुए भारतीय नारी का विद्रोही रूप चित्रित किया है।

"अब चिठ्ठी नहीं आयेगी" में लेखक ने नारी की दहेज समस्या को एक नयी दृष्टि से चित्रित किया है॥

"आवागमन" कहानी में इसका करुण चित्र प्रस्तुत किया है कि नारी की सामाजिक राजनैतिक सीमायें उसे अपनी मकसद से किसप्रकार तोड़ती हैं॥ "सुंदर पड़ोस" में नारी के अकेलेपन की समस्या का चित्रण करते हुए बताया है कि परपंरा से चली आयी इस समस्या में नारी किस प्रकार पिस रही है। "चक्करघिन्नी" कहानी में इस ओर संकेत दिया है कि समय के अनुसार अथवा सामाजिक बदलाव के अनुसार नारी का बदलना अत्यंत आवश्यक हैं॥

चर्चित कहानियों में प्रस्तुत समस्याएँ अपने नये परिवेश एवं नई दृष्टि के साथ प्रस्तुत होती है। समस्याएँ तो पहले बहुचर्चित है लेकिन यहाँ दृष्टि एवं परिवेश की नवीनता उनमें विशेषता पैदा करती है।

****